

विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। -हरिऔध

यह कैसा लोकतंत्र?

“भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है”, यह वाक्य हम विश्व के लगभग सभी मंचों पर भारतीय नेताओं से सुनते रहते हैं। इसके कारण हम भारतीय, गौरव का अनुभव भी करते हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात, देश की जनता ने इसे सही सिद्ध भी किया है। उदाहरणार्थ, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 1975 में देश में आपातकाल लागू किया तो एक बार ऐसा लगा कि शाहद देश में लोकतंत्र सदैव के लिए विदा हो गया है, किंतु मार्च 1977 में हुए चुनावों ने यह सिद्ध किया कि लोकतंत्र ने केवल जीवित है अपितु सुदृढ़ भी है। जनता ने इसका परिचय सर्व शक्तिशाली इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस को हराकर, नव गठित जनता पार्टी को भारी बहुमत से जिता कर दिया।

इसके पश्चात समय-समय पर कई ऐसी घटनाएँ हुईं जो लोकतंत्र की मूल भावना के विपरीत थीं, जिससे यह लगा कि भारत में वास्तविक लोकतंत्र को खतरा उत्पन्न हो रहा है। सत्तर के दशक में निर्वाचित विधायकों ने हरियाणा में जिस तेजी से बार-बार दल बदले, उसे 'आया राम, गया राम' का नाम दिया गया। इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए 1985 में दलबदल विरोधी कानून बनाया गया। इसके अंतर्गत यह प्रावधान किया गया कि कोई भी निर्वाचित सदस्य दल बदलने पर अपनी सदस्यता खो देगा। यदि किसी विधायक दल के एक तिहाई सदस्यों के एक साथ दल बदलने पर उसकी सदस्यता बनी रहती थी। इससे भी जब दल बदल की प्रवृत्ति पर प्रभावी अंकुश नहीं लगा तो बाद में इसमें संशोधन कर एक तिहाई की अनिवार्यता को बढ़ाकर दो तिहाई कर दिया गया। यह लिखने की आवश्यकता नहीं है कि दल बदल किसी वैचारिक आधार पर नहीं होकर केवल मात्र पद और धन के लोभ में ही होता है।

गत सप्ताह जो घटनाक्रम महाराष्ट्र में चला, उसने तो एक बार पुनः भारतीय लोकतंत्र को उपहास का पात्र बना दिया है। ऐसा कहने का आधार क्या है यह निम्न विवेचन से स्पष्ट हो जाएगा।

2019 के विधानसभा चुनाव में महाराष्ट्र में भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना का चुनाव पूर्ण समझौता था। उन्होंने आपस में सीटों का बंटवारा किया था। इन दोनों दलों को मिलाकर बहुमत से कहीं अधिक सीटें प्राप्त हुईं। जनादेश स्पष्ट रूप से भारतीय जनता पार्टी और शिवसेना के गठबंधन को मिला था। चुनाव के परिणाम आने के बाद मुख्यमंत्री पद की महत्वाकांक्षा के कारण बहुत खींचतान चली। भाजपा देवेन्द्र फडनवीस को मुख्यमंत्री बनाना चाहती थी, जबकि शिवसेना उद्धव ठाकरे को। शिवसेना का कहना था कि ऐसा आश्वासन भाजपा द्वारा उन्हें दिया गया था।

जब भाजपा ने उद्धव ठाकरे को मुख्यमंत्री बनाने से इन्कार कर दिया, तो उसने राष्ट्रावदी कांग्रेस के अजीत पवार को उपमुख्यमंत्री पद का प्रलोभन देकर, देवेन्द्र फडनवीस को मुख्यमंत्री पद की शपथ सुबह होने से पहले ही राजभवन में दिलाया। ऐसी ही हाल चलनी थी और न ही चल पाई। यह तीन दिन में ही गिर गई और उद्धव ठाकरे ने राष्ट्रावदी कांग्रेस और कांग्रेस के साथ मिलकर महा विकास संगठन बनाकर सरकार बना ली।

फलस्वरूप, शिवसेना ने भाजपा से अलग होने का निर्णय किया और कांग्रेस तथा राष्ट्रावदी कांग्रेस के साथ मिलकर महा विकास आघाटी गठबंधन बनाया। यह सर्वविदित है कि भाजपा और शिवसेना का गठबंधन कई वर्षों से महाराष्ट्र में बना हुआ था उन्होंने साथ ही कई चुनाव लड़कर विजय भी प्राप्त की थी। जनता ने भी इसी गठबंधन के पक्ष में जनादेश दिया था जिसे बदलते हुए एक अवसरवादी राजनीति का परिचय देते हुए महा विकास आघाटी का गठबंधन हुआ और महाराष्ट्र में सरकार बनी। निश्चित रूप से, महाराष्ट्र के मतदाताओं ने स्वयं को ठगा हुआ महसूस किया होगा।

कहा जाता है, इतिहास अपने आप को दोहराता है। यही कहावत महाराष्ट्र के मामले में सचक बैठती है जो काम शिवसेना ने भाजपा के साथ किया था, वही काम अब भाजपा, शिवसेना के साथ कर रही है।

शिवसेना के नंबर दो के नेता एकनाथ शिंदे ने लगभग 40 शिवसेना विधायकों के साथ उद्धव ठाकरे के विरुद्ध विद्रोह करते हुए अलगा गुट बना लिया। एक नाथ शिंदे गठ 8 दिन से मीडिया में चर्चा का केंद्र बने हुए हैं। पहले ये विधायक सूरत के एक पांच सितारा होटल में ठहरे और गत 7 दिन से गुवाहाटी के पांच सितारा होटल में ठहरे हुए हैं। इनकी एक एक गतिविधि पर मीडिया द्वारा ऐसी नजर रखी जा रही है और 24 घण्टे इनसे संबंधित समाचारों को ऐसे प्रसारित किया जा रहा है जैसे देश में इसके अलावा कोई खबर है ही नहीं।

विधायकों को अपनी प्रतिबद्धता बदलने का अवसर दल बदल कानून की कमियों के कारण मिलता है। फिलहाल यह मामला कानूनी दांवपेच में फंसा हुआ है, एक दृष्टिकोण यह है के दो तिहाई से अधिक अलग हुए विधायक तभी अयोग्यता से बच सकते हैं जब वह किसी दल में विलय हो जाएं।

लोकतंत्र, “जनता का, जनता के लिए और जनता द्वारा” किए गए शासन का नाम है, किंतु नेतागण, जिस प्रकार चुने जाने के बाद, अपनी राजनीति प्रतिबद्धता गिराफिट से भी तब गति से बदलते हैं, उसे देखकर तो ऐसा लगता है कि लोकतंत्र केवल नाम के लिए है। अब उनका उद्देश्य केवल मात्र एक है, यै-केन-प्रकारेण सत्ता में बने रहना अथवा सत्ता प्राप्त करना। फिर चाहे, इसके लिए उसे जनता के साथ विश्वासघात ही क्यों न करना पड़े।

विधायकों को अपनी प्रतिबद्धता बदलने का अवसर दल बदल कानून की कमियों के कारण मिलता है। फिलहाल यह मामला कानूनी दांवपेच में फंसा हुआ है, एक दृष्टिकोण यह है के दो तिहाई से अधिक अलग हुए विधायक तभी अयोग्यता से बच सकते हैं जब वह किसी दल में विलय हो जाएं। एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले विधायकों ने अभी तक ऐसा कोई निर्णय नहीं लिया है। इसी कारण इनमें से 16 विधायकों को दल से निष्कासित करने का निर्णय शिवसेना ने लिया है। इस आधार पर विधानसभा के उपाध्यक्ष ने इन विधायकों को अयोग्य घोषित करने हेतु नोटिस दिया है। इस नोटिस को एकनाथ शिंदे के गुट द्वारा उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी गई है। कानूनी रूप से तो इसका निर्णय उच्चतम न्यायालय कर देगा किंतु कुछ प्रश्न इसके बाद भी अनुत्तरित ही रहेंगे।

पहला, विधायकों को पांच या सात सितारा होटलों में बंधक करके रखने की क्या आवश्यकता है? क्या उनके विधायक कोई वस्तु हैं, जिन्हें कोई बोली लापार खरीद कर ले जाएगा? विधायकों एवं दलों के आचरण से तो कुछ-कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है कि उन्होंने स्वयं को एक प्रकार से मंडी में खड़ा कर रखा है कि कोई भी आगे और अधिकतम दाम लगाकर उन्हें ले जाए। क्या राजनीतिक दलों को अपने विधायकों पर विनियुक्त विश्वास नहीं है जो उन्हें बड़े-बड़े होटलों में बंदी बनाकर रखा गया है। कुछ-कुछ इसी प्रकार का घटनाक्रम हमने राजस्थान में भी देखा था, जब सचिन पायलट ने कुछ समर्थक विधायकों के साथ मिलकर कांग्रेस सरकार को एक प्रकार से अस्थिर कर दिया था। उस समय भी, कई दिनों तक कांग्रेस विधायक एक बड़े पांच सितारा होटल में कई दिनों तक रहे थे। अब वही क्रम महाराष्ट्र के विधायकों द्वारा दोहराया जा रहा है।

दूसरा, विधायकों को आलीशान होटलों में कई दिनों तक ठहराने का खर्चा कौन उठा रहा है? क्या इसे विधायकों को प्रलोभन देना मानकर, निर्वाचन आयोग इसका संत्रान नहीं ले सकता?

तीसरा, असमंजस की इस पूरी अवधि में जन हित के विभिन्न कार्य लंबित रहने से जनता को जो परेशानी हुई, उसका जिम्मेदार कौन है? इस अवधि में राज्य की शासन व्यवस्था ठहर सी जाती है क्योंकि कोई भी नीतिगत निर्णय मंत्रियों द्वारा नहीं लिए जाते हैं। उनका पूरा ध्यान केवल अपने विधायकों को पक्ष में बनाए रखने पर रहता है। इसी परिप्रेक्ष्य में, शिवसेना के संजय रावत का यह बयान निंदनीय है कि गुवाहाटी से एकनाथ शिंदे के साथ वाले विधायकों की लाशें मुंबई आएंगी। उन्होंने यह भी कहा कि लाखों शिव सैनिक केवल उनके इशारे की प्रतीक्षा कर रहे हैं और वह किसी भी स्थिति तक जा सकते हैं। इसी उकसाने का ही परिणाम है कि महाराष्ट्र के विभिन्न स्थानों पर उस प्रदर्शन हुए जिनमें आगजनी और तोड़फोड़ की घटनाएँ हुईं। दोनों पक्षों के बयानों का स्तर बदल नीचे चला गया है। इस पूरी आपाधापी में, लोक कल्याण एवं जनता द्वारा अपने निर्वाचित प्रतिनिधियों में व्यक्त किए गए विश्वास का कहीं कोई नामो नशान नहीं दिखाई देता है।

होना तो यह चाहिए कि दल बदल कानून पर एक बार इन अनुभवों के आधार पर पुनर्विचार किया जाए एवं ऐसी व्यवस्था की जाए कि किसी व्यक्ति के उस दल के अनुशासन के बाहर जाने पर उस व्यक्ति की सदस्यता स्वतः ही समाप्त हो जाए। इसमें किसी प्रकार का अपवाद नहीं रखा जाय। यदि वह दल छोड़ना चाहे तो उसे दोगुण जनता द्वारा चुनकर आना होगा। जब सदस्यों की सदस्यता समाप्त होगी, तो कोई भी निर्वाचित प्रतिनिधि विधायक दलबदल करने से पहले सी बार सोचेगा। हाँ, किसी विषय पर गुण-अवगुण के आधार अपने दल से अलग विचार रखने पर उसे दल बदल नहीं माना जाय। इससे सदनों में सदस्य गण दल के गुलामी की तरह व्यवहार करने को बाध्य नहीं होगा। इस हेतु आवश्यक संशोधन कानून में किया जा सकता है।

जनप्रतिनिधियों की इस विकृत मानसिकता का एक प्रमुख कारण यह भी है कि उनके लिए अपने आने का उद्देश्य जनता की सेवा नहीं अपितु स्वयं के लिए अकूत धन की व्यवस्था करना है ताकि पीढ़ियों तक का इन्तेजाम हो जाय।

अधिकारशा जनप्रतिनिधियों के पास आय का कोई साधन न होने पर भी उनकी संपत्ति में दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि कैसे हुई है, इसकी जांच करना असंभव नहीं है, किंतु सामान्यतय ऐसा होता दिखाई नहीं देता। जब कभी होता भी है तो उसका उद्देश्य केवल राजनीतिक विरोधियों को प्रताड़ित या भयभीत कर अपने पक्ष में करने का होता है। हाल ही में ई.डी., इनकम टैक्स और सीबीआई द्वारा की गई विभिन्न कार्यवाही से तो ऐसा ही प्रतीत होता है। आंकड़े बताते हैं कि इन एजेंसियों द्वारा गत सालों में की गई कार्यवाही में सफलता अंततः केवल 1 प्रतिशत से भी कम में मिली है।

विभिन्न राज्यों में विभिन्न राजनैतिक दलों के कार्य और व्यवहार को देखकर आम नागरिक के मन में यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है - 'यह कैसा लोकतंत्र?'

-अतिथि सम्पादक, राजेन्द्र भाणवत (पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)



राशिफल

मंगलवार 28 जून, 2022

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत् 2079, मृगशिरा नक्षत्र सांय 7:05 तक, गंड योग प्रातः 7:47 तक, शुकुनि कर्ण प्रातः 5:53 तक, चन्द्रमा मिथुन राशि में संचार करेगा।

पंडित अनिल शर्मा

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मेघ, बुध-वृष, गुरु-मीन,

शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मेघ, केतु-तुला राशि में। आज यमघट योग सांय 7:05 से सूर्योदय तक है। आज चतुरदशी में वृद्धि हुई है। आज पितृकार्य अमावस्या है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: प्रातः 9:05 से 10:47 तक, लाभ-अमृत 10:47 से 2:13 तक। शुभ 3:53 से 5:37 तक।

राहुकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:39, सूर्यास्त 7:20

मेघ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लेंगे। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

तुला
धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लेंगी।

वृष
आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता यथावत बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

वृश्चिक
शुभ कार्यों में व्यवनधान सामने आ सकते हैं। शुभ कार्यों को टालना पड़ सकता है। आवश्यक कार्यों में विनय हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियाँ अभी बनी रहेगी।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। महत्वपूर्ण मामलों में परिचितों से सहयोग मिलेगा। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिजनों के सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सफल रहेंगे। नवीन कार्य से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण मन में असंतोष बना रहेगा। मानसिक तनाव बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा।

मकर
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटक हुए कार्य बनने लेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनाहोनी की आशंका से बचा हुआ मन का भय समाप्त होगा।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लेंगे।

कुंभ
परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आपसी ईर्ष्या-भयमन्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। अटक हुए व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लेंगे। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। चलते भागते में प्रगति होगी।

मीन
घर-परिवार में अतिथियों का आमनन बना रहेगा। अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

वयः संधि और हिंसा: वैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता है



डॉ. रामावतार शर्मा

समय पर जब तक सूरज चांद रहेगा टाइम नंबर लागू कर दितलवाई जाती है।

सामाजिक सामंजस्य और संपर्क का अभाव, किन्हीं बाहरी या अंदरूनी कारणों से बेचैनी, भविष्य का अंधकारमय होना आदि भी किसी व्यक्ति को हिंसक बनने का कारण बन सकते हैं। इसके अलावा हर हिंसक हत्यारे के पीछे तकरीबन सौ ऐसे लोग होते हैं जो किसी की हत्या करने की सोचते तो जरूर हैं पर उनका विवेक उन्हें ऐसा करने से रोक लेता है। पर बदलते माहौल में इन सौ में से कितने लोग हिंसा को अपनाएंगे यह एक विचारणीय विषय होना चाहिए। याद रखा जाय कि हिंसा के रोकने ही एक मात्र उपाय है। प्रतिहिंसा तो हिंसा को उर्वक प्रदान करती है।

लोग अत्यकालीन उद्देश्य पूर्ति के लिए हिंसा का सहारा लेकर आगे बढ़ जाते हैं और पीछे रह जाती हैं तबाहियों

की निशानियाँ जैसा कि कवि दुष्यंत ने कहा था :-

तुम क्या जानो इस आंधी में, कई घंटों टूट गए इन असफल निर्मितियों के शव, कल पहचाने जायेंगे।

हिंसा को नियंत्रित करने में हमें विज्ञान का सहारा लेना चाहिए। अमेरिका के मनोरोग विशेषज्ञ डॉक्टर जोनाथन मेट्ज़े का मानना है कि हमें विकसित होते मानव मन का और अधिक अध्ययन करना चाहिए। एक अति महत्वपूर्ण अध्ययन में पता चला है कि हड्डी मरिफ़्टक का एक भाग होता है जिसे प्री फ्रंटल लोब कहा जाता है। यह हिंसा निर्णय लेने और उसके परिणामों के बारे में विश्लेषण करता है। इस भाग को पूर्ण विकसित होने में पच्चीस वर्ष लगते हैं यानि पच्चीस साल तक किसी मनुष्य को सामान्य परिस्थितियों में न तो हथियार बनाया चाहिए, न विवाह करना चाहिए, न कार और मोटरसाइकिल डेनी चाहिए और ना ही जोर देने का अधिकार। उपरोक्त विषयों का गहन प्रशिक्षण तो दिया जा सकता है पर अधिकार पच्चीस साल की उम्र में ही मिलना चाहिए। देखा गया है कि हिंसक दुर्घटनाओं में ज्यादातर वाहन चालक युवक ही होते हैं जिन्हें बिना किसी प्रशिक्षण के 18 से 20 वर्ष की उम्र में ड्राइविंग लाइसेंस मिल गया होता है। ध्यान रहे कि कड़े अनुशासन के बावजूद सैन्य भी अपने सैनिकों को शांति काल में हथियार नहीं रखने देती है।

हालांकि पच्चीस वर्ष की उम्र के बाद वाहन चलाने के अधिकार या मतदान आदि की बात पर बहुमत विरोध जताता नजर आया। पर सड़कों पर लहराती मोटरसाइकिल, तीव्र गति से दौड़ती कारें, एक तरफा होते मतदान, वैवाहिक हिंसा आदि देखने पर उपरोक्त बातें सार्थक लगेंगीं। चीन तथा पश्चिमी और खाड़ी पार के देशों में वाहन चलाना का अधिकार जीवन की एक उपलब्धि है, भारत की तरह रिश्तत बटोरने का जरिया नहीं। मानव बम ज्यादातर बालक या युवक होते हैं। हिंसक लोग छोटे बच्चों को केंद्र में रख कर ही पूरी धरती को अशांत करने में लगे रहते हैं। गौली मिट्टी भी मनचाहे रूप में डाली जा सकती है। हर देश का शासक अक्सर बच्चों को संशोधित और बाल अधिकांश को पोषित करता है ताकि भविष्य में अनुपालकों की संख्या में वृद्धि हो सके।

अमेरिका के हत्या कांडों के शोधकर्ता जिलियन पीटरसन और जेम्स डेंसले ने अपनी पूरी उम्र स्कूलों में होने वाली हिंसा के अध्ययन को समर्पित की है। उनके निष्कर्ष के आधार पर तरुणावस्था और युवावस्था की वयःसंधि और फिर कुछ युवावस्था का आखिरी दौर एक व्यक्ति का बड़ा महत्वपूर्ण समय होता है। समाज और सरकार यह व्यवस्था स्थापित करे कि जीवन के पहले पच्चीस साल तक शिक्षा का आधार स्वैविक विकास होना चाहिए वरना यहाँ बिखरी हुई लाशें, वहाँ कुछ हैं मकां टूटे किन्हीं की किस्मतें फूटी, कई सपने हुए झूटे।

-डॉ. रामावतार शर्मा, (चिकित्सक एवं लेखक)

देश के जज्ञातों की पहली किरण : अयोध्या



डॉ. कैलाश सोजानी

बाद भी एक भी ध्वस्त मंदिर के पुर्ननिर्माण का कार्य प्रारम्भ नहीं हो सका। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के पश्चात् अयोध्या में मंदिर निर्माण के प्रथम अध्यय का शुभारम्भ हुआ। इसलिए यह सामान्य नहीं, एक ऐतिहासिक एवं गौरवशाली शुभारम्भ है। इस सम्बन्ध में दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि मंदिरों को ध्वस्त कर के मस्जिद निर्माण का निर्णय तत्कालीन राजाओं ने किया। किसी न्यायालय का निर्णय नहीं था।

आजादी के अमृत महोत्सव तक की यात्रा पूर्ण करने तक भी इस प्रकार का निर्णय करने की ताकत आज के राजा के पास नहीं है। राजनीति विज्ञान को पुस्तकों में पढ़ाया जाता है कि तलवार की नोक के बल पर बने बादशाहों से तो प्रजातांत्रिक व्यवस्था से निर्वाचित बादशाह ज्यादा ताकतवर होते हैं। धरालत पर इस स्थिति का देश को इन्तजार है।

अनुभव साक्षी है कि न्यायालयों के भरोसे तो मंदिरों के पुर्ननिर्माण का कार्य सैकड़ों वर्षों तक भी सम्भव नहीं है। इस तकलीफ का कारण यह है कि देश के माननीय न्यायाधीश प्रायः कानून की किताब पढ़ने के बजाय सुबह के अखबार पढ़ कर निर्णय लिखवाते हैं। सर्वोच्च न्यायालय को इसलिए अयोध्या में राममंदिर निर्माण के निर्णय में इतना समय लग गया। आज निर्णय होना और अब तक नहीं होना कारण स्पष्ट है। न अमी हाल ही में अम्बेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के प्रबन्ध मण्डल की बैठक में भाग लेने गया, उस समय अयोध्या का भी अवसर मिला। रामलला के दर्शन लाभ के साथ-साथ यह जानकर अत्यन्त हर्ष का

अनुभव हुआ कि मंदिर की भव्यता के अनुरूप ही पूरी अयोध्या नगरी को आकर्षक बनाने का काम बड़े जोर-शोर से चल रहा है। रेलवे स्टेशन और एयरपोर्ट को सैकड़ों करोड़ रूपये के बजट से अत्याधुनिक बनाया जा रहे हैं। सरयू नदी के किनारों को अहमदाबाद के साबरमती के रिवर फ्रन्ट की भाँति आकर्षक बनाया जा रहा है। भारतीय संस्कृति, इतिहास, आयुर्वेद, योग आदि पर शोध हेतु वैदिक विश्वविद्यालय खड़ा किया जा रहा है।

कुल मिलाकर विज्ञान यह है कि भव्य राम मंदिर के साथ-साथ अयोध्या को देश और दुनियाँ में एक श्रेष्ठ एवं आधुनिक धार्मिक तथा पर्यटन नगरी के रूप में स्थापित किया जावे। अयोध्या के कायाकल्प से पूरे शहर में हर्ष और उल्लास का वातावरण है। नगरवासीयों के चहरे के भावों से ऐसा लगता है जैसे एक लम्बे वनवास के पश्चात् साक्षात भगवान श्रीराम पुनः अयोध्या पधार रहे हैं।

-डॉ. कैलाश सोजानी, पूर्व कुलपति, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

आबकारी-पुलिस विभाग की लापरवाही से पुरातत्व स्थल शराबियों का अड्डा बना



चौरु/उनिवार, (निर्स)। उपखंड क्षेत्र का प्रसिद्ध पर्यटक स्थल हाथी भाटा आबकारी-पुलिस विभाग की मेहरबानी से सुरू प्रेमियों का अड्डा बना हुआ है। जिसके चलते हुए सुरू प्रेमी खुलेआम पर्यटन स्थल पर शराब का सेवन कर मौज कर रहे हैं। वहीं पुलिस प्रशासन एवं आबकारी विभाग की कर्णित अनदेखी एवं उदासीनता के कारण यहा पर सुरू प्रेमियों की मौज हो गई है तथा हाथी भाटा की प्रतिमा के पास ही शराबियों द्वारा खुलेआम शराब की पार्टियों की जा रही है। जिसके कारण पर्यटकों के सामने गंभीर समस्याओं का अंबार लगा हुआ है।

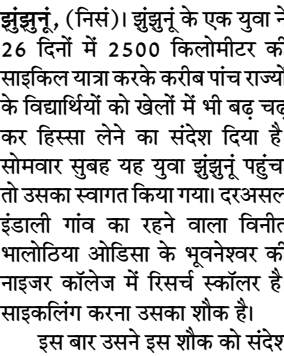
आश्चर्यजनक बात तो यह है कि हाथी भाटा स्थल के मुख्य गेट से महज लगभग एक सौ फिट की दूरी पर ही आबकारी विभाग की कर्णित मेहरबानी से शराब की दुकान संचालित है। सुरू प्रेमी शराब की दुकान से शराब लेते हैं और मजे से पर्यटक स्थल पर बैठकर शराब की पार्टियों खुल्लेआम करते हैं। जिन्हें रोकने टोकने वाला कोई नहीं है। पुलिस प्रशासन भी इनके खिलाफ



स्थल के मुख्य गेट से महज सौ फीट की दूरी पर ही शराब की दुकान संचालित।

कार्रवाई करने के बजाय हाथ पर हाथ धरे मूकदर्शक बना हुआ है। इससे पर्यटक स्थल पर आने वाले लोगों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। कई बार पर्यटक स्थल पर घूमने के लिए आने वाले पर्यटक शराबियों के पार्टियों को देखकर गेट के पास से ही बाहर वापस चले जाते हैं। यह बड़ी दुविधा एवं विडंबना है कि जिले का प्रसिद्ध पर्यटक स्थल आज शराबियों का अड्डा बन गया है और पर्यटकों को बड़ावा देने के दावे करने वालों में भी आज स्वालियाँ निशान उठते नजर आ रहे हैं। फिर भी जिम्मेदार मौन साधे हुए हैं?

साइकिल से 26 दिन में 2500 किमी. का सफर तय कर घर लौटा विनीत



शुंभुनू, (निर्स)। शुंभुनू के एक युवा ने 26 दिनों में 2500 किलोमीटर की साइकिल यात्रा करके करीब पांच राज्यों के विद्यार्थियों को खेलों में भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेने का संदेश दिया है। सोमवार सुबह यह युवा शुंभुनू पहुंचा तो उसका स्वागत किया गया। दरअसल इंडाली गांव का रहने वाला विनीत भौलीटिया ओडिसा के भूवनेश्वर की नाइजर कॉलेज में रिसर्च स्कॉलर है। साइकिलिंग करना उसका शौक है।

इस बार उसने इस शौक को संदेश में बदलने के लिए तय किया कि वह अपने घर, यानि कि शुंभुनू साइकिल से जाएगा। इसके बाद उसने एक जून को अपनी साइकिल यात्रा शुरू की। जो पांच राज्यों भूवनेश्वर, झारखंड, बिहार, यूपी और राजस्थान होते हुए आज संपन्न हुई। विनीत का शुंभुनू पहुंचने पर छात्र नेता पंकज गुजर के नेतृत्व में स्वर्ण जयंती स्टेडियम में स्वागत किया गया। इस मौके पर विनीत ने बताया कि वर्तमान माहौल में खेलों को शिक्षा की बजाय कम महत्वाता मिल रही है। इसलिए उसने शिक्षा के साथ-साथ खेलों को महत्व मिला। इसी संदेश के साथ यह यात्रा एक जून को शुरू कर 27 जून को



विनीत के घर पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया।

पूरी की है। विनीत ने बताया कि इस दौरान ना केवल राह चलते लोगों से वह मिला और खेलों को महत्वाता बताई। बिल्का आईआईटी भूवनेश्वर, पटना, बीएचयू, कानपुर और धनबाद में भी पढने वाले युवाओं से रूबरू होकर उन्हें जाना कि वे सबसे अलग क्यों होते हैं और उनमें खेलों को लेकर क्या रुझान है। जो काफी अच्छा रहा।

ढाबों पर काम करते मिले बच्चे:- विनीत ने बताया कि अब वे अगली राइड चाइल्ड लीबर को रोकने के लिए करेंगे। 2500 किलोमीटर की

इस यात्रा के दौरान उसने कई ढाबों में बच्चों को काम करते देखा और उससे बातचीत भी की। लगभग सभी बच्चों ने पढने को इच्छा जाहिर की। लेकिन किसी ना किसी मजबूरीवश वे पढने को उम्र में प्लेट साफ करते हुए मिले।

मौसम ने नहीं दिया साथ:- विनीत ने बताया कि मौसम ने दूसरे ही दिन अपना रंग दिखाया और साथ नहीं दिया। वहा भूवनेश्वर से निकलकर भद्रकर ओडिसा ही पहुंचा था कि तेज बारिश आने लगी। लेकिन विनीत ने रोज 100 किमी. की राइडिंग जारी रखी।